वैश्विक परिदृश्य का आधुनिक संस्कृत साहित्य पर प्रभाव

बीज शब्द : शिक्षा, धर्म, संस्कृत साहित्य, आधुनिक संस्कृत साहित्य, संस्कृत के रचकार।

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

वर्तमान सदी में प्रवेश करते हुए मानव समाज ने यातायात एवं संचार क्षेत्र में अद्‌भुत प्रगति कर ली थी। विश्व एक बड़े गाँव का आकार ग्रहण कर चुका है, किन्तु यह बड़ा गाँव विश्व बाजार का रूप ले चुका है जिसमें धनोपार्जन ही सफलता का पर्याय है। समस्त मानव मूल्य इस बाजार को समर्पित हो गये हैं। इसके विरूद्ध मानव संघर्ष भी चल रहा है। इस आधुनिक परिदृश्य को संस्कृत रचनाकारों ने बिना किसी साहित्यिक आन्दोलन के अपने सहज साहित्य कर्म के माध्यम से अभिव्यक्ति किया है। आधुनिक विश्व की समस्याओं को उन्होंने सहज, सरल शैली में जिस तरह प्रस्तुत किया है उससे भविष्य में उनकी रचनाओं में जनसंघर्षों की अभिव्यक्ति की संभावना है। प्रस्तुत शोध लेख आधुनिक संस्कृत रचनाकारों के युग दायित्व के इस निर्वाह को प्रस्तुत करता है।

डॉ. (श्रीमती) मधु सत्यदेव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
दी०द०उ० गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर।

वर्तमान सदी में प्रवेश करते हुए मानव समाज ने यातायात एवं संचार क्षेत्र में अद्‌भुत प्रगति कर ली थी। विगत 20 वर्ष इस प्रगति के विभिन्न आयामों के साक्षी है। आज सहस्रों मील दूर बैठे व्यक्ति की छवि देखते हुए उससे वार्तालाप एक सामान्य परिघटना बन चुकी है। मीलों यात्रा करना भी एक सामान्य प्रक्रिया हो चुकी है। इस मापदण्ड से वास्तव में विश्व एक बड़े गाँव का आकार ग्रहण कर चुका है, किन्तु स्थिति का दु:खद पक्ष यह भी है कि यह बड़ा गाँव कोई आदर्श ग्राम नहीं है। न तो इसमें ग्रामीणजन का निष्कपट व्यवहार है और न ही परस्पर सौहार्द्र का परिवेश दृष्टिगोचर है। इस गाँव में विषमता के अनेक सोपान मानव समाज के अन्तर्गत विद्यमान है, और सहस्र वर्षों से संयोजित मानव-मूल्यों को तिरोहित करते हुए मानव को यह शिक्षा दी जा रही है कि दूसरे के मस्तिष्क पर अपना पैर रखते हुए सफलता की सीढ़ियाँ चलते रहो और शिखर तक पहुँचो। इस तथाकथित सफलता के लिये विश्वासघात, छल-कपट, घृणा, तिरस्कार, अपराध, सब कुछ उचित है। जिसमें सफलता मिले वही करो। यहाँ सफलता भी धनोपार्जन का पर्याय बन गयी है। अत: कुछ विचारक इस बड़े गाँव को उचित ही विश्व बाजार के नाम से पुकारते हैं। अब समस्त मानव-मूल्य इस बाजार द्वारा संचालित होने लगे, सभ्यता संस्कृति इसी बाजार की भेंट चढ़ जायें, राजनीति इसी की सेवा करने लगे, दया-धर्म सब कुछ बिकने लगे तो स्वाभाविक है कि हमारे समक्ष प्रतिक्षण अमानवीय कृत्यों का भयावह दृश्य उपस्थित होता रहे। आज विश्व में अनाज सहित मानव उपयोग में आने वाली वस्तुओं का विशाल भण्डार है, किन्तु कोटि-कोटि मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से भी वंचित है। जीवित रहने के लिये विवश होकर बाजार की बेड़ियों में जकड़े मानव को अपनी आस्था के विरूद्ध ऐसे कृत्य करने पड़ रहे है जिन्हें वह कदापि नहीं करना चाहता है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि बाजार के सम्मुख असहाय होकर मानव समाज इससे समझौता कर बैठा है, अपितु इसके विरूद्ध उसने प्रतिकार भी किया है। चींटी भी दबाने वाले को काटती है, फिर मानव अत्याचार और अन्याय के विरूद्ध शांत क्यों रहेगा। अत: जितना सत्य आज का दारूण परिदृश्य है, उसके विरूद्ध मानव-संघर्ष भी उतना बड़ा सत्य है। साहित्य न समस्त तथ्यों को उद्‌घाटित करता है।

आधुनिक परिदृश्य की अभिव्यक्ति विभिन्न भाषाओं के आधुनिक साहित्य में हुई है। देववाणी संस्कृत में भी यह प्रचुर मात्र में विद्यमान है। संस्कृत रचनाकारों ने बिना किसी साहित्यिक आन्दोलन के अपने सहज साहित्य कर्म के माध्यम

से यह कार्य सम्पन्न किया है। जिस साहित्य में सहस्र वर्षों का समृद्ध भण्डार हो, साहित्य के प्रति परम्परागत अवधारणा तथा विचार उपस्थित हों, वहाँ कुछ भी नवीन लिखने में रचनात्मक साहस की आवश्यकता होती है। आधुनिक संस्कृत रचनाकारों ने यह साहस प्रदर्शित किया है। प्राचीन का सम्मान करते हुए उन्होंने आधुनिकता का भी स्वागत किया। आधुनिक समाज के जो मूल्य मानवता के पक्ष में थे उनके समर्थन में अपनी लेखनी चलायी और वर्तमान समाज की विभिन्न विसंगतियों के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। ऐसा करते हुए उन्होंने कलात्मक सौन्दर्य के साथ कोई समझौता नहीं किया। कहा जा सकता है कि आधुनिक संस्कृत रचनाकारों को यह तथ्य पूर्णतया ज्ञात था कि कोई भी रचना पहले पठनीय होनी चाहिये उसके पश्चात् ही उसके माध्यम से अभिव्यक्त विचारों पर चर्चा हो सकती है। यही कारण है कि आधुनिक संस्कृत रचनाकारों की कथा, काव्य, उपन्यास, नाटक इत्यादि पहले उत्कृष्ट रचना का मापदण्ड पूर्ण करते है और पाठक उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से अवगत होते है। बड़े से बड़े आलोचकों ने भी उनकी रचनाओं पर कभी प्रचार सामग्री का आरोप नहीं लगाया। यहाँ यह तथ्य इसलिये महत्वपूर्ण है कि हिन्दी-अंग्रेजी सहित विभिन्न देशी-विदेशी भाषाओं की रचनाओं पर प्रचार सामग्री होने का आरोप समय-समय पर समीक्षक लगाते रहे है और वहाँ से इस विचार-विमर्श हुआ कि कला, कला के लिये है अथवा मानव-मूल्य के सम्प्रेषण का एक माध्यम है। संस्कृत में इस तरह के विचार-विमर्श के होने की सम्भावना ही नहीं हो पायी, क्योंकि यहाँ कोई भी रचना ऐसी नहीं रही कि उस पर विचारधारा प्रचार करने का आरोप लग सके। विचारों की नमक या चीनी के समान घुल-मिल कर रचना में प्रयुक्त होना चाहिये इस मान्यता के प्रति किसी प्रकार का संशय संस्कृत रचनाकारों के मन में नहीं था।

इसी कारण संस्कृत रचनाकारों ने आधुनिक विषयों को लिया, आधुनिक मान्यताओं को भी अपनाया और बड़े सहज और सरल रूप में साहित्यिक सौन्दर्य के साथ उन्हें पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया। 21वीं सदी की संस्कृत रचनाओं में भी यह विशेषता विद्यमान है। इस तथ्य को कतिपय रचनाओं के माध्यम से दर्शाया जा सकता है।

आधुनिक संस्कृत के प्रख्यात हस्ताक्षर डॉ. राधाबल्लभ त्रिपाठी के सात एकांकियों का संग्रह है ''प्रेक्षणक् सप्तकम्''।[1] इस रचना में आधुनिक समाज के परिदृश्य को एकांकी के सौन्दर्य के साथ प्रस्तुत किया गया है। प्रथम एकांकी-'सोम प्रभम्'' प्रथमदृष्टया तो दहेज की समस्या पर लिखी एक सामान्य एकांकी प्रतीत होती है, किन्तु वस्तुतः इसमें दिखाया गया है कि जिस महिला पर सास-श्वसुर अत्याचार करते है और अन्ततः उसे जलाकर मार डालने का षड्यंत्र रचते हैं। विद्रोह वह नहीं करती अपितु उसकी बेटी अपनी माँ के प्रति दादा-दादी का अमानवीय आचरण देखकर पुलिस को बुला लेती है और माँ की जान बचाती है एवं माँ को सान्त्वना भी देती है कि- 'अम्ब किं ते भू यः प्रियमुपहरामि।'[2] इस कथा में दुश्चक्र का व्यूह सोमप्रभा ही तोड़ती है अतः वह इस कथा की नायिका है। इसमें पुत्र की अभिलाषा, स्त्री दुर्दशा, दहेज प्रथा आदि अनेक बिन्दुओं को चिह्नित करते हुए अनेक समस्याओं की ओर लेखक ने संकेत किया है। इसी प्रकार 'धीवरशाकुन्तलम् एकांकी में वर्तमान शासन व्यवस्था के अन्तर्गत भ्रष्टाचार और उत्कोच को प्रदर्शित किया गया है। यह एकांकी महाकवि कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् के एक प्रसंग पर आधारित है जिसमें एक धीवर को नायक बनाया गया है। यहाँ अंगूठी मिलने पर धीवर का सामना एक लोभी सुनार और भ्रष्ट राजपुरुष से होता है। धीवर की पत्नी का नाम भी शकुन्तला है, जो अपने घर से विद्रोह कर धीवर के पास आयी थी और धीवर से पूरी राज-व्यवस्था की दशा के विषय में जानने पर अन्यत्र बसने का निर्णय ले लेती है और कहती है कि- चल इतः कुत्रपि गत्वा वसर्ति साधयिष्वावः।[3] इस एकांकी संग्रह छठीं रचना 'गणेश'-पूजनम'[4] धर्म के नाम पर होने वाले आडम्बर तथा धनोपार्जन को अत्यन्त रोचक रूप में प्रस्तुत करती है जिसमें गणेश उत्सव के बहाने प्रतिवर्ष चन्दा वसूलने वाला बुलाकी राम कुख्यात सेठ सूर्य मणि की स्तुति करवाने लगता है, लेकिन रचनाकार ने स्वयं गणेश को बुलाकी राम को सबक सिखाने के लिए प्रस्तुत कर दिया और बुलाकी राम अपनी गलती स्वीकार कर लेता है। वस्तुतः यह रचना गणेश उत्सव का व्यापार करने वाले पाखण्डियों पर करारा कटाक्ष है। अन्तिम एकांकी प्रतीक्षा में वर्तमान वातावरण और उसमें युवतियों की असुरक्षा का सजीव चित्रण है। युवतियों के अपहरण की अनेक घटनाओं से आशंकित परिवार की एक किशोर कल्पना को जब घर लौटने में विलम्ब हो जाता है तो पूरा परिवार किसी दुर्घटना की आशंका करने लगता है। यहाँ तक कि उस किशोरी के प्रति भी अविश्वास उत्पन्न होता है। वस्तुतः यह एकांकी आज के वातावरण में होने वाले अपराधों पर प्रश्नचिह्न लगता है। अन्त में पिता का यह कथन 'पुत्री अतिस्नेह पापशंकिती न्यायेन यदन्यथा अन्यथा चिन्ततम् तत्र प्रत्यविश्वासत्, अपितु आत्मनो दौर्वल्यादोष तदलमन्यथा गृहीत्वा[5] मुक्ति नामक प्रहसन में मनोरंजक ढंग से कवि ने सन्देश दिया कि अपने घर-परिवार और समाज के प्रति दायित्वों की पूर्ति ही मुक्ति है।[6] साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी, संस्कृत एवं भोजपुरी पर समान अधिकार रखने वाले ये वर्तमान पीढ़ी के सर्वाधिक समर्थ सशक्त और सक्रिय रचनाकार है। उनकी कृतियाँ-कवि की बहुमुखी प्रतिभा की ज्वलन्त साक्षी है। खण्डकाव्य, नवगीत,

महाकाव्य एकांकी नाटिका एवं कथा, इन समस्त विधाओं में रचना करने वाले डॉ. मिश्र जी अपने ढंग के एक मात्र रचनाकार हैं। इक्षुगन्धा[7] डॉ. मिश्र की प्रथम कृति है जो पारिवारिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की आठ सशक्त कहानियों का संग्रह है। ये कहानियाँ समस्या प्रधान है, परन्तु कथाकार विसंगतियों में जन्मी इन समस्याओं को अनुत्तरित नहीं छोड़ देता, उनका रोचक समाधान भी प्रस्तुत करता है जो सत्य है, शिव भी है और सुन्दर भी है। एक मात्र ऐतिहासिक कहानी ताम्बूल करवाहिनी को छोड़कर संकलन की समस्त कहानियाँ नारी जीवन की समस्याओं से जुड़ी हैं कहीं अनाथ, असहाय परिवार का पेट भरने के लिए किसी नवयुवती का यौवन के मूल्य पर नौकरी प्राप्त करना (जिजीविषा) तो कहीं अवैध प्रणय सम्बन्ध से उत्पन्न कन्या का गन्दी नाली में प्रक्षेप (अनामिका)[8], कहीं अनभीष्ट वैवाहिक सम्बन्ध की कडुवाहट (एक हायनी)[9] तो कहीं आरोपित वैधव्य की दुस्सह पीड़ा (भग्नपंजर)[10] कहीं दो समानधर्मा समस्या से ग्रसित जिन्दगियों का अचानक मणिकांञ्चन संयोग (सुखशायित प्रच्छिका)[11], तो कहीं बचपन में टूटे रिश्तों का प्रकारान्तर से पुनर्निर्माण संपन्न कर देती है। 'रांगडा' संस्कृत मूलक शब्द है। यह संस्कृत रण्डा (विधवा) का तद्भव है। यह नौ लघु कथाओं का संग्रह है। सभी कथायें अलग-अलग प्रसंगों, घटनाओं, अनुभूतियों और सामाजिक समस्याओं से सम्बद्ध है। छल-कपट, ऊँच-नीच, धनी-निर्धन आदि भेदाभाव की भावना का तिरस्कार कवि को अभीष्ट नहीं है। चोरी, डकैती, क्रूरता, हत्या, छल-कपट, चुगलखोरी, मदिरापान जैसे अनेक प्रकार के अपराध हुआ करते है इसीलिये प्रवीण चौधरी कुलदीपक[12] में अपने पुत्र से कहते हैं- मार्जार-पोतक अधिवक्तु पुत्रस्त्वम्। इसी प्रकार चंचा (धोखा) दुहरा जीवन जीने वाले एक अधिवक्ता तथा उसके पापाचार से पीड़ित मुन्नीबाई की कथा है जिसे Flash Back (पूर्वोन्मेष विधि) से प्रस्तुत किया गया है।

'चित्रपर्णी' विविध परिवेशों में पनपी लेखक के अनुभव व परिचय क्षेत्र से उभरी, उसकी चिन्तन-प्रक्रिया और जीवन-दृष्टि को प्रतिबिम्बित करती समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत करती हुई 62 कहानियों का संग्रह है। चित्रपर्णी की सरल बोधगम्यता अनिर्वचनीय है। उनकी शैली का ऐसा प्रभाव पड़ता है जैसे राजेन्द्र मिश्र के भीतर का सर्जक कथाकार कहानी नहीं सुना रहा अपितु उनके जीवन का कोई अंश सुना रहा हो। लेखक ने अपने आस-पड़ोस, मित्र सम्बन्धी सबको पास से देखा है, जिया है, जिसके माध्यम से उन्होंने सम्पूर्ण समाज, राष्ट्र विश्व के जीवन मूल्यों से सम्बद्ध किया। 'हमने' छागबलि:'[13] जैसे बलि प्रथा को देखा तो नहीं पर सुना अवश्य है। मायानन्द जैसे ढोंगी, कुपात्र साधुओं को समाज के पतन का हिस्सा बनते देखा है और दोगली राजनीति का अनुभव भी किया है। उनकी कथाएँ अधिकांशत: सत्य को स्वीकार करती है जैसे 'वरान्वेषणम्' में पुत्री के लिये वर तलाश करती विधवा माँ जिस लड़के को अपनी पुत्री के लिए खोज पाई है वह उसकी इस दशा में उसी से विवाह करना चाहता है और अन्त में मात्र एक वाक्य में यह कथा अपनी पूरी स्थिति बता देती है- विवाहार्थमसो समुद्यत:, परन्तु मया सहैवेति तस्य दृढो निश्चय:'।[14] यहाँ पर पाठक हतप्रभ रह जाता है। इसी प्रकार 'नियुक्ति' भी सूक्तिपरक कहानी कही जा सकती है। महाविद्यालयों में नियुक्ति विषयक ढोंग किए जाते हैं, जिसकी एप्रोच (पहचान) मंत्री स्तर की होती है उसी की नियुक्ति होती है। सुखानन्द भारती महाकाव्य में भी इसी प्रकार का दिखावा होता है और अन्त में शिक्षामंत्री का साला जो तृतीय श्रेणी प्राप्त है, हिन्दी भी ठीक से नहीं बोल पाता है, संस्कृत विषय का प्रवक्ता बना दिया जाता है-एवं संस्कृत प्रवकृपदेख संस्कृतस्य नियक्तिर्जाता।[15] यह एक पंक्ति ही सम्पूर्ण कथा की प्रतिध्वनि मात्र है। चित्रपर्णी की समस्त कथायें मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर लिखी गयी हैं।

एक विशिष्ट धर्म में आश्रित लोग यहाँ आकर जीवन के अन्त समय में अन्य धर्म को ग्रहण कर रहे है।[17] क्या मानवीय गुणों से युक्त लोग केवल मनुष्य मात्र होकर जीवित नहीं रह सकते।[18] भारत की विपन्नता पर नायिका क्षुब्ध होकर प्रश्न उठाती है कि इस भारत की पवित्र भूमि के अरण्यों में, महर्षियों ने कठोर तपस्याएँ की है किन्तु दरिद्र, रोगी, दु:खी लोगों की तृप्ति का मार्ग बनाने की इच्छा किसने की?[19] यह पूरी रचना वर्तमान भारत की आर्थिक-सामाजिक दुर्दशा का दर्शन है साथ ही संघर्ष का संदेश भी देती है। उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा पुरस्कृत रचनाकार प्रोफेसर हरिदत्त शर्मा की रचनाओं में कलात्मक सौन्दर्य के साथ आधुनिक भारत की विविध समस्याओं का चित्रण हुआ।[20] इसका जीवन्त प्रमाण है। इसमें प्रथम नाटक पंचनंद पीडनम्[21] में पंजाब के आतंकवाद का चित्रण है तो वृक-विकोशनम्[22] में भारतीय समाज के रग-रग में व्याप्त भ्रष्टाचार का सजीव वर्णन है। अबला-बलम्[23] में नारी-उत्पीड़न के मार्मिक चित्रण के साथ यह सन्देश भी दिया गया है कि अबला को अपने अबलात्व को हटाकर सबला बनना होगा। इसमें दो सखियों शकीला और सोनाली के संघर्ष-संकल्प के उद्गारों के साथ इस नाटक का अन्त होता है।[24] इस नाट्य-संग्रह के नाटक 'एक भेद' आतंकवाद की आग में झुलस रहे कश्मीर का चित्रण करता है और अन्त में यह संदेश देता है कि विदेशी कुशक्तियों के इशारे पर कश्मीर में जो रक्त बहाया जा रहा है वह न हिन्दुओं का है, न मुसलमानों का है। वह रक्त सब कश्मीरियों का है, वह रक्त ही है।[25] डॉ. शर्मा की संस्कृत-नवगीत परम्परा अत्यन्त सर्जनात्मक 'लसल्लतिका' है। इसमें भी सुमधुर संस्कृत गीतों के माध्यम से 'मानव-पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है।[26] इसमें

'प्रसरति हा पशुता' शीर्षक कविता में वर्तमान राजनीति की तीक्ष्ण आलोचना है जिसमें जनरक्षक ही भक्षक बन गये है, उनकी नीति वास्तव में दुर्नीति है। वस्तुतः इनकी यह रचना साम्प्रदायिक राजनीतिक, सामाजिक आदि विषयों पर गीतिबद्ध हैं। वर्तमान समय में अव्यवस्थाओं, विसंगतियों, नैतिक मूल्यों के अपकर्ष आदि से कवि कभी-कभी इतना उद्वेलित जाता है कि वह अपने आपसे ही पूछ बैठता है-कथं नु जीवान'।[27]

नवीन कहानी के पक्षधर डॉ. केशव चन्द्र दास केवल बहुचर्चित उपन्यासकार ही नहीं अपितु नई संस्कृत कहानी के क्षेत्र में उतने ही सफल कहानीकार भी है। डॉ. केशव चन्द्र दास ने तिलोत्तमा, मधुयानम्, शीतलतृष्णा, निकषा अरूणा अंजलि, शशिरेखा आदि उपन्यासों में आधुनिक परिवेश का चित्रण करते हुए समसामयिक सन्दर्भों को प्रस्तुत किया है। भारतीय जन-जीवन, राजनीति अथवा नगर-जीवन की घटनाओं पर आधारित ये उपन्यास वैश्विक परिदृश्य के प्रभाव का वर्णन करते है। आज का युवा वर्ग अपनी इच्छाओं की पूर्ति में लगा रहता है। वह सही-गलत की पहचान करने में असमर्थ है। अतएव वह गलत कार्य करने की ओर भी प्रवृत्त होता है। इसी भाव की अभिव्यक्ति है- 'ऊँ शांति'[28], जिसमें चन्दन स्वामी अपनी पुत्री चन्दा के विषय में दुःखी होता है वह समाज के विषय में सोचता है कि चन्दा ने युवावस्था में अगर गलत कार्य कर लिया तो वह समाज में निन्दित हो जायेगा। इसी प्रकार आपकी निम्न- 'पृथवी', दिशा-विदिशा, 'महान्', 'एकदा', उर्मिचूड़ा आदि कहानी उल्लेखनीय है।[29] उर्मिचूड़ा में 'भिक्षुः' कहानी में परम्परागत भिक्षुक और वर्तमान युग में भिक्षुक के संवाद द्वारा देश को भिक्षुक बनाने वाली विषम परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है। एक भिक्षुक विविध धर्मों के भिक्षुओं से उनका परिचय पूछता है और अन्त में अपने परिचय में अपने भिक्षुक होने की परिस्थितियाँ व देश की वर्तमान परिस्थितियों का यथार्थ परिचय देता है।

उपरोक्त उदाहरणों से यह कहा जा सकता है कि आधुनिक संस्कृत के रचनाकार युग-दायित्व के प्रति जागरूक है। आधुनिक समस्याओं को उन्होंने सहज, सरल शैली में अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। अभी जो कार्यभार इन रचनाकारों द्वारा करना शेष है वह है मानव-संघर्ष की गाथाओं को भी रचनाओं में प्रस्तुत करना।

वर्तमान जन-संघर्षों की यथेष्ट प्रस्तुति वर्तमान साहित्य में नहीं हो पाना प्रायः सभी भाषाओं की समस्या है और देववाणी संस्कृत के रचनाकारों को भी यह अवरोध पार करना है। कार्य, सरल नहीं है किन्तु नयी चुनौतियों का सामना करना संस्कृत रचनाकारों के लिए कोई नवीन तथ्य नहीं है। युगों से उन्होंने चुनौतियों का सामना किया है और आज के संस्कृत पाठकों को यह आशा है कि भविष्य में संस्कृत में जन-संघर्षों की रोचक रचनाओं का रसास्वादन का अवसर प्राप्त होगा।

सन्दर्भः-

1. प्रेक्षणसप्तकम्, डा0 राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
2. वही, सोम प्रभम्
3. वही, धीवरशाकुन्तलम्
4. वही, गणेशपूजनम्
5. वही, प्रतीक्षा
6. वही, मुक्ति
7. इक्षुगन्धा, डा0 राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, उ0प्र0
8. वही, अनामिका
9. वही, एकहायनी
10. वही, भग्न पंजर
11. वही, सुखशयित प्रच्छिका
12. रांङडा, कुलदीपकः, डा0 राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद।
13. चित्रपर्णी, छागबलिः, डा0 राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद।
14. चित्रपर्णी, वरान्वेषणम्ऋ, डा0 राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद।
15. वही, नियुक्तिः
16. वही, पृ0-12, 14, 143, 96, 109
17. अपराजिवधूमहाकाव्यम्, 2/26 डा0 पूर्णचन्द्र कलावटिया-प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
18. वही, 10/41
19. वही, 10/35
20. आक्रन्दनम् - प्रो0 हरिदत्त शर्मा - आन्जनेय प्रकाशन, इलाहाबाद।
21. वही, पंचनद पीडनम्
22. वही, विक्रोशनम्
23. वही, अबलाबलम
24. वही,
25. वही, एकमेवरक्तम्
26. लसल्लतिका, राका प्रकाशन, पृ0-62
27. वही, पृ0-31, 32
28. डा0 केशवचन्द्र दास - ऊँ शांतिः, प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली।
29. उर्मिचूड़ा, पृ0-81 केशचन्द्र दास,, प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली।

◆◆◆